

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये युद्धकाण्डे

॥ षष्ठः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ षष्ठः सर्गः ॥

कर्तर्यनिर्णयाय मन्त्रिणः प्रति समुचितसम्प्रतिदानार्थं रारणस्यानुरोधः

लङ्कायां तु कृतं कर्म घोरं दृष्ट्वा भयारहम्।
राम्कसेन्द्रो हनुमता शक्रेणेर महात्मना।
अब्रवीद् राम्कसान् सर्गान् हिया किष्किदराङ्गुथः ॥ 6.6.1 ॥

धर्षिता च प्ररिष्टा च लङ्का दुष्प्रसहा पुरी।
तेन रानरमात्रेण दृष्टा सीता च जानकी ॥ 6.6.2 ॥

प्रासदो धर्षितशैचत्यः प्रररा राम्कसा हताः।
आरिला च पुरी लङ्का सर्गा हनुमता कृता ॥ 6.6.3 ॥

किं करिष्यामि भद्रं रः किं रो युक्तमनन्तरम्।
उच्यतां नः समर्थं यं कृतं च सुकृतं भरेत् ॥ 6.6.4 ॥

मन्त्रमूलं च रिजयं प्ररदन्ति मनस्विनः।
तस्माद् रै रोचये मन्त्रं रामं प्रति महाबलाः ॥ 6.6.5 ॥

त्रिरिधाः पुरुषा लोके उतुमाधममध्यामाः।
तेषां तु समरेतानां गुणदोषौ रदाम्यहम् ॥ 6.6.6 ॥

मन्त्रस्त्रिभिर्हि संयुक्तः समर्थैर्मन्त्रनिर्णये।
मित्त्रैरपि समानार्थैर्वाक्त्रैरपि राधिकैः ॥ 6.6.7 ॥

সহিতো মল্লযিৎরা যঃ কৰ্মারম্ভান্ প্রবর্তযেৎ।
দৈরে চ কুরুতে যত্নং তমাহঃ পুরুষোত্তমম্ ॥ 6.6.8 ॥

একোহর্থং রিমৃশেদেকো ধর্মে প্রকুরুতে মনঃ।
একঃ কার্যাণি কুরুতে তমাহর্মধ্যমং নরম্ ॥ 6.6.9 ॥

গুণদোষৌ ন নিশ্চিত্য ত্যকত্বা দৈরর্যপাশ্রযম্।
করিষ্যামীতি যঃ কার্যমুপেক্ষেৎ স নরাধমঃ ॥ 6.6.10 ॥

যথেমে পুরুষা নিত্যমুত্তমাধমমধ্যমাঃ।
এরং মল্লোহপি রিজেয উত্তমাধমমধ্যমঃ ॥ 6.6.11 ॥

ঐকমত্যমুপাগম্য শাস্ত্রদৃষ্টেন চক্ষুষা।
মল্লিণো যত্র নিরতাস্তমাহর্মল্লমুত্তমম্ ॥ 6.6.12 ॥

বহুরীৰপি মতীর্গৎরা মল্লিণামর্থনির্গযঃ।
পুনর্ঘট্রৈকতাং প্রাপ্তঃ স মল্লো মধ্যমঃ স্মৃতঃ ॥ 6.6.13 ॥

অন্যোন্যমতিমাস্থায যত্র সম্প্রতিভাষ্যতে।
ন চৈকমত্যে শ্রেয়োহস্তি মল্লঃ সোহধম উচ্যতে ॥ 6.6.14 ॥

তস্ম্যাৎ সুমল্লিতং সাধু ভরন্তো মতিসত্তমাঃ।
কার্যং সম্প্রতিপদ্যন্তমেতৎ কৃত্যং মতং মম ॥ 6.6.15 ॥

রানরাণাং হি ধীরাণাং সহস্রৈঃ পরিরারিতঃ।
রামোহভ্যেতি পুরীং লঙ্কামস্মাকমুপরোধকঃ ॥ 6.6.16 ॥

তরিষ্যতি চ সুর্যজ্ঞং রাঘবঃ সাগরং সুখম্।
তরসা যুক্তরূপেণ সানুজঃ সবলানুগঃ ॥ 6.6.17 ॥

সমুদ্রমুচ্ছেদযতি রীর্যেণান্যৎকরোতি রা।
তস্মিন্নেরংরিধে কার্যে বিরুদ্ধে রানরৈঃ সহ।
হিতং পুরে চ সৈন্যে চ সর্ৱং সম্মল্ল্যতাং মম ॥ 6.6.18 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামাযণে ৱাল্মীকীযে আদিকাৰ্যে যুদ্ধকাণ্ডে ষষ্ঠঃ সর্গঃ ॥